जुलाई, 2024

e-publication
क्रमांक 19

मासिक पशुपालन निर्देशिका

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

संभावित बाढ़ के दौरान पशुओं की देखभाल

व्हाट्सएप ग्रुप से जुडें: प्रगतिशील पशुपालक ग्रुप से जुड़ने हेतु 930-000-0857 व्हाट्स एप पर मैसेज करें।

बीते कुछ सालों से प्रदेश के कई जिलो में मानसून में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं| इसलिए पशुपालक स्वयं की सुरक्षा के साथ पहले से ही पशुओं के बचाव के लिए तैयार रहे |

बाढ़ के दौरान किये जाने वाले उपाय:

- **मौसम पूर्वानुमान:** मौसम पूर्वानुमान द्वारा बाढ़ या भारी बारिश की सम्भावना को लेकर जागरूक रहे |
- **पशुओं को सुरक्षित स्थान पर रखें:** भारी बारिश की सम्भावना होने पर पशु निकासी योजना तैयार करें, साथ ही पशु आवास का ऊँची जगह पर प्रबंध करें, जैसे पहाड़ी आदि।
- **आपातकालीन प्राथमिक पशु आहार सुनिश्चित करें:** बाढ़ के समय, ऊँचे स्थानों पर यदि प्राकृतिक रूप से चारा उपलब्ध नहीं हो तो, खाद्य सामग्री का सही मात्रा में भंडारण करके बाढ़ के दौरान पशुओं को पूर्णतः पोषित रखा जा सकता है।
- **पानी की व्यवस्था:** साफ़ जल पशु आहार जितना ही महत्वपूर्ण हैं| अगर स्वच्छ जल स्त्रोत संभव नहीं हैं तो, मानव मानकों के अनुसार अशुद्ध जल के आधिकारिक स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है।
- **पशु स्वास्थ्य की निगरानी:** पशुओं को संक्रमण से बचाने और बीमारियों का पता लगाने के लिए नियमित रूप से पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। महामारियाँ (जैसे की गलघोटू, मुँह खुर आदि) से बचाव हेतु टीकाकरण समय पर कराएं|
- **पशु टैगिंग व पशु बीमा:** आपात समय के दौरान सभी पशुओं की सूची तैयार रहनी चाहिए और इन सभी पशुओं पर स्थायी पहचान संख्या लगी होनी चाहिए (जैसे टैग) साथ ही होने वाले नुकसान से बचने हेतु सभी पशुओं का बीमा करवाएं|
- **इमरजेंसी किट:** आपातकालीन परिस्थितियों में तैयारी के लिए पहले से ही जरूरी किट तैयार करें | ऐसी एक इमरजेंसी किट में पशु प्रबंधन उपकरण (जैसे हॉल्टर, रस्सी आदि), दवाएं, साफ सफाई के लिए जरूरी सामान, सेल फोन, टार्च लाइट, पोर्टेबल रेडियो और बैट्रियां आदि होते हैं |

बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होने पर क्या करें ?

- पशुओं को खुला रखा जाना चाहिए और उन्हें बांधना नहीं चाहिए ताकि अचानक आपदा की स्थिति में पशु स्वयं सुरक्षित स्थान पर जा सके।
- यह भी सुनिश्चित करे कि आसपास बिजली के तार सुरक्षित हैं और ज्वलनशील सामग्री से दूर हैं।
- बाढ़ जैसी अपादा के दौरान पशुओं की निगरानी रखे साथ ही पानी के स्तर और बाढ़ के प्रभाव का निरीक्षण करना जरूरी है।
- आपदा के दौरान मरे पशुओं को दफनाने के लिए 6 फीट गहरा गड्ढा जो जल स्त्रोतों (नदी, कुएं) से कम से कम 100 फुट दुरी पर हों ।

जुलाई मास के पशुपालन सम्बन्धी कार्य

- **बाह्य परजीवी नियंत्रण करें| इसके लिए कीटनाशक का उपयोग चिकित्सीय परामर्श से ही करें|**
- **डेयेरी फार्म पर प्राकृतिक विधि से परजीवी नियंत्रण जैसे की देसी मुर्गीपालन करें|**
- **पशुओं को गीला चारा, काली/फफूंद लगी तूड़ी न दें, चारा उपलब्धता के लिए सम्पूर्ण फीड ब्लॉक का इस्तेमाल करें|**
- **शेड में व छतो पर जलभराव या स्त्राव न होने दें, पानी की निकासी पर ध्यान दें |**
- **वर्षा ऋतु में जहाँ मनुष्यों में मच्छरों द्वारा डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि रोगों की सम्भावना बढ़ जाती हैं, वही पशुओं में बाह्य परजीवी (चिचड़, मख्खी आदि) से होने वाले रोग जैसे बबेसिया, सर्रा, थेलेरिया, आदि का प्रकोप बढ़ सकता हैं |**
- **बचाव हेतु साफ़ सफाई पर ध्यान दें, बाड़े में जल भराव न होने दें, परजीवी नियंत्रण पर ध्यान दें, बाड़े में पंखे व हवा का आवागमन (वेंटिलेशन) हो |**

डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सुजोय खन्ना एवं डॉ ज्योति शुन्ठवाल